हिन्दी वेब जगतः भविष्य का इतिहास

रविकान्त

मैं समुझ्यो निरधार, यह जग काचो काँच सो।
एकै रूप अपार, प्रतिबिंबित लखिए तहाँ।।

- बिहारी

वैसे तो मानवीय भाषा का कम्प्यूटर की आंकिक (0, 1) भाषा से कोई नैसर्गिक संबंध नहीं है, लेकिन जिन भाषाओं में इंसान और कम्प्यूटर के बीच बातचीत हो सकती है, उनकी विविधता में ही उसका सौंदर्य भी है और तमाम तरह की तकनीकी परेशानियाँ भी। इसी दीवान में छपे अपने लेख में ब्रूस स्टर्लिंग ने नेट की तुलना अंग्रेज़ी भाषा से की है, जो इस अर्थ में बिल्कुल सटीक है कि जैसे अंग्रेज़ी का कोई मालिक, पहरेदार या ठेकेदार नहीं है, उसी तरह नेट भी बहते नीर की तरह है — स्वतंत्र और अबाध। लेकिन एक और अर्थ में, चूँकि कम्प्यूटर की मातृभाषा अंग्रेज़ी है (लिहाज़ा, नेट और वेब की भी), यह तुलना थोड़ी चिढ़ानेवाली लग सकती है। 'डिजिटल डिवाइड' की बात करते हुए कम्प्यूटर, फ़ोन, मोडेम और बैंडविड्थ ख़रीदने की औक़ात के मुताल्लिक़ समाजों की अमीरी-ग़रीबी की चर्चा तो आम है लेकिन भाषाई अक्षमता भी इस खाई का एक अनिवार्य पक्ष है, इस पर प्रायः चर्चा नहीं होती। अभी भी नेट का ज़्यादातर कारोबार इसकी मूलभाषा अंग्रेज़ी में ही होता है। परंतु, नेट एक अंतर्राष्ट्रीय जन माध्यम भी है इसलिए इस पर किसी भाषाविशेष का एकाधिपत्य बना रहना असंभव-सा है। धीरे-धीरे लोगों ने कम्प्यूटर की भाषा को स्थानीयकृत करना शुरु कर दिया है और जगत जोड़ता जाल (वर्ल्ड वाइब वेब) अब ढेर सारी भाषाओं में आबाद है। यह सब कहना बहुत आसान लगता है, और चूँकि अब वेब पर हिन्दी की एक उपस्थिति है, कुछ अंतर्वस्तु आ गई है तो मैं यह लेख लिख पा रहा हूँ। लेकिन अंग्रेज़ीतर भाषाओं में कम्प्यूटिंग की कहानी एक लंबे संघर्ष की अलग और असमाप्त दास्तान है ('लंबा' शब्द मैं इशारतन ही इस्तेमाल कर रहा हूँ — पिछले एक-दो दशक के छोटे-से इतिहास में क्या छोटा, क्या लंबा!)। बहरहाल, यह लेख उस छोटे-से लंबे इतिहास के हर पहलू में न जाकर हिन्दी की हालिया और अभी एक बौनी-सी वेब-उपस्थिति का एक संक्षिप्त लेखा-जोखा है। इस बड़ी तेज़ी से बदलते और फैलते जनपद में अन्य भारतीय भाषाओं की तरह हिन्दी की हालत के प्रति मैं आशान्वित हूँ। बल्कि अगर मौजूदा दौर में इसकी ताज़गी, दरियादिली और आज़ाद तबीयत पर भरोसा रखें तो आसार इस बात के हैं कि इसके मिज़ाज और तेवर बुनियादी तौर पर बदलने वाले हैं। लेकिन शुरुआत उस जद्दोजहद की कहानी से जिससे यह अभी भी पूरी तरह उबर नहीं पाई है।

कम्प्यूटर तभी वाक़ई जादुई मशीन बनता है जब आप इसकी तमाम क्षमताओं का इस्तेमाल कर सकें। जहाँ एक ओर अंग्रेज़ी और मशीन में जैसे एक नैसर्गिक संबंध है, वहीं हिन्दी को कम्प्यूटर दूसरे लोक की भाषा समझता है।

यह सही है कि हम अब टाइप कर लेते हैं, ईमेल कर लेते हैं, दस्तावेज़ों की नक़ल कर सकते हैं, लेकिन यह सब अब भी एक पराये-से डिजिटल माहौल में होता है। आपके फ़ाइल व फ़ोल्डर के नाम, उनको बनाने से लेकर संजोने तक के सारे कमांड अंग्रेज़ी में ही हैं। वेबसाइट भी बना और नेट पर झुला ली जाती है, लेकिन ये वेबसाइटें दरअसल ऐसी छोटी दुकानें हैं, जिनमें माल की विविधता के साथ-साथ लिपियों की विविधता भी है। अब कल्पना कीजिये कि चंद ज़रूरियात ख़रीदने आप बाज़ार गये हैं और हर दुकानदार आपसे अलग तरह की मुद्रा की फ़रमाइश करे। हिन्दी के अधिकांश कंप्युलिपियों की हालत यही है। इनमें आपसी बातचीत नहीं होती यानी बायीं जेब का पैसा दायीं जेब में नहीं रख सकते। नतीजतन, हर दुकान पर जाने से पहले आप दरवाज़े पर ही नई मुद्रा भंजा लें, अर्थात नई लिपि उतारें तो आगे कुछ बूझ पड़ेगा। ई-मेल के साथ भी वहीं दिक़्क़त हैः 'रीडिफ़' का लिप्यंकण 'वेबदुनिया' नहीं पढ़ेगा, 'मेलजोल' का 'अपनामेल' नहीं। भेज लीजिए चिट्ठी, घूम लीजिए वेब पर, कर लीजिये सर्फिंग! इन दुश्वारियों को कम्प्यूटर की शब्दावली में स्टैंडर्डाइज़ेशन की कमी कहेंगे।

दुनिया भर में मुद्राओं की तरह फ़ॉन्ट के स्तरीकरण में सरकारों की भूमिका अहम रही है। कुछ प्रयास हमारे यहाँ भी हुए हैं लेकिन कुछ इस अंदाज़ में कि कोई उन्हें मानता ही नहीं। यानी समाधान है भी लेकिन नहीं भी। सी-डैक (C-DAC) ने बहुत सारा जन-संसाधन ख़र्च करके कुछ लिपियाँ बनाईं और 'आई-लीप' नामक एक सॉफ़्टवेयर बनाया जो सिर्फ़ भारत के सरकारी दफ़्तरों की शोभा बढ़ाता रहा। सरकार को उसपर भी पैसे कमाने की सूझी जो उसकी अनगढ़ता की कोढ़ में खाज की तरह साबित हुआ। पर आम लोगों ने लिपि को ख़ारिज करके अनौपचारिक या 'चुराये हुए' सॉफ़्टवेयर पर 'चुराई हुई' लिपियों के सहारे अपना काम करना और करवाना ज़्यादा श्रेयस्कर समझा। अब जाकर श्रीलिपि जैसी चीज़ें मुफ़्त उपलब्ध करायी जा रही हैं, जबकि उनका ज़माना लद गया है। इस तरह मॉड्युलर इन्फ़ोटेक के द्वारा गढ़े गये हाल के बहुभाषी सॉफ़्टवेयरों की नियति भी सरकारी अहातों में ही सड़ जाने की लगती है, ठीक उसी तरह जिस तरह नौकरशाही टकसालों में ढाले गए शब्द ऑफ़िसिया अल्मारियों में बंद शब्दकोशों में ही दम तोड़ देते हैं। भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के तकनीकी अनुवाद वाले 'शब्दिका' प्रॉजेक्ट की दयनीय और अपठनीय हालत देखकर तो यही लगता है कि इतिहास से सीखना हमारी फ़ितरत नहीं है। वैसे गुमान ख़ूब पालते हैं, वर्ना टीडीआइएल की साइट पर *कठोपनिषद* का नचिकेता हमें क्यों उपदेश पिलाता होता?

वैसे, सियापा भी हमारा संस्कार क्यों हो? शुक्र है कि नेट सिर्फ़ सरकार के हाथ में नहीं है। वाहियात सरकारी समाधानों से अलग लोगों ने ज़रूरत के मुताबिक़ कुछ अपने हल ढूँढ़े हैं। साथ ही देश के एक प्रसिद्ध निर्यात अर्थात विदेश में बसे देसी इंजिनियरों ने कुछ तरक़ीबें कर के 90 के दशक में कुछ कामचलाऊ लेकिन महत्वपूर्ण पैकेज बनाए। आई-ट्रांस, जेट्रांस, आईराइट32 जैसी तरक़ीबों से लिप्यंतर संभव हो गया। यानी कि अंग्रेज़ी के कुंजीपट का इस्तेमाल कर हिन्दी की ध्वन्यात्मक प्रकृति का फ़ायदा उठाते हुए, कम्प्यूटर पर लिखना संभव हो सका। कुछ लोगों ने भारतभाषा की शुषा लिपि को लेकर अच्छी-अच्छी वेबसाइटें भी बनाईं। ऐसा इसलिए भी हुआ क्योंकि इन तमाम प्रोग्रामरों की पकड़ कम्प्यूटर और अंग्रेज़ी दोनों पर काफ़ी मज़बूत थी। आज भी विदेशों में बननेवाली ज़्यादातर साइटें शुषा पर ही चलती हैं और क्या ख़ूब चलती हैं। ये साइटें हिन्दी के प्रति मोहब्बत से प्रेरित तो हैं, लेकिन इनमें हिन्दीत्ववादी कटुता और जड़ता नहीं है। एक खुलापन है, हिन्दी के छूट गये जनपदों को पुनर्प्रतिष्ठित करने की लालसा है। इस खुले आकाश के नीचे हिन्दी को एक ही साँस में 'किसानों, विद्वानों और गानों की भाषा' कहा गया है। आई-ट्रांस गीत संग्रह (song book) पर संदर्भ सहित फ़िल्मी गीतों का विशाल संकलन है। साहित्य की बात करें तो अमीर ख़ुसरो से लेकर अंशुमान अवस्थी तक फैली इस समृद्ध परंपरा में सबके लिए जगह हैः यहाँ भेदभाव की न तो इच्छा है, न ही अवकाश। नेट की दुनिया सच्चे अर्थों में बहुभाषी है। एक साधु-समाज है, जहाँ शब्दों, भाषाओं और रचनाकारों से उनकी जात नहीं पूछी जाती। अगर कुछ लोग पूछते भी हैं तो भलमनसाहत में सीखने-जानने के ख़याल से, अगर किसी और नीयत से पूछते हैं तो उनकी नीयत में खोट है, यह भी बता दिया जाता है। शास्त्रीय शुचिता का वह चिरपरिचित विश्वविद्यालयी आग्रह नहीं है जो हिन्दी और उर्दू को अलहदा ज़बान माने। उदाहरण के लिए प्रोफ़ेसर मलय की साइट 'अमर हिन्दी लेखकों-कवियों' की सूची में एक साथ निराला और ग़ालिब, सिद्ध कवियों के साथ वली दक्कनी, बच्चन के साथ फ़ैज़ और भगत सिंह के आजू-बाजू जावेद अख़्तर के लिंक मिल जाते हैं। यहाँ *पृथ्वीराज रासो* है तो *मधुशाला* भी, महादेवी वर्मा हैं तो काका हाथरसी भी। इनमें से ज़्यादातर अंतर्वस्तु

Hindi Links - Mozilla {Build ID: 2002041711}

File Edit View Go Bookmarks Tools Window Help Debug QA

Back Forward Reload Stop http://www.cs.colostate.edu/~malaya/hindilinks.html Search Print

Home Bookmarks The Mozilla Organiza... Latest Builds

Academic Hindi Programs

Penn, Yale, Loyola, Chicago Washington, Duke, Iowa, Oregon, Cornell, Mich, Columbia, Hawaii, Illinois, Alabama, U. of Virginia, U. of Minnesota, Florida Vedic College,
Syracuse Berkeley, Univ. of Texas, Austin, Rutgers, Emory, NC State, NYU, Indiana, UCLA, Manitoba, La Trobe, Calgary, Uppsala Uni, Kochin, London, Oslo, Budapest, Oeska, Jagiellonian University, Poland, Gent, Nether,

- Hindi Instruction and Internet
- CARLA: North America
- Int'l Programs in India
- Himalaya Hindi House NEW
- Article South Asian Studies for a Diasporic Age
- Hindi teachers LCTL mailing list

Learning Hindi

- Software: Akshar Animations, Visual Hindi, BharatVani Hindi Teacher, Hindi Guru CD
- Hindi Learning books/CDs from amazon.com
- Distance learning course from La Trobe University
- PC-HINDI - Hindi Vocabulary Practice Drill
- Anand School of Indian Studies, Books, instruction (Houston, TX)
- Hindi-Urdu Bol Chaal by BBC with cassette UPDATED
- Outline of Hindi Grammar book/cassettes
- Vedic Uni. course
- Language/30 Series cassette/Phrase book
- **Hindi Classes:** Directory (information invited)
- Organizing a Hindi class
- Hindi Teaching Materials UPDATED
- Dictionaries available
- CD-Rom - Hindi - English Dictionary link invalid
- Hindi World (Japan) UPDATED
- Baby Blankets in Hindi
- Hindi Translation services

Urdu resource

- Urdu alphabet pronunciation key
- Learn to Read Urdu Learning Urdu Alphabets (shockwave)
- Urdu-English Dictionary, English-Urdu Dictionary
- History of Urdu poetry NEW Poetry: Priyanka, Syed, Abbas, Shoeb, Kasif, Asad, Safi, Adil, Shakil, Shantanu, Khansani Nita's Urdu Poetry Collection.
- Ghazals sung by Jagit and Chitra NEW
- Urdu magazine "Phool"
- Urdu Poetry with English translations
- Farsi script interface, FarsiBrowser Java Applet NEW
- Urdu and Hindi-Urdu teaching institutions.
- Urdu Ethnologue, Urdu, a graceful language
- A Nasa A Month NEW
- Hindi/Urdu Phrasebook
- fonts
- Newsgroup: alt.language.urdu.poetry
- http://s24.deja.com/getdoc.xp?AN=525939646&CONTEXT=956868190.1096679429&hitnum=48> Origin of "Urdu" Discussion
- Urdu and its Contributions Discussion UPDATED
- Classic Iranian literature NEW

Indo-European heritage

- Indo-European Language Family UTexas
- Indo-European Chronology NEW
- In Search of the Indo-Europeans
- Relations between Sanskrit, Pali, the Prakrits and the Modern Vernaculars Bhandarkar, 1883 (scanned images)
- Everything you ever wanted to know about Proto-Indo-European
- Dictionary of most common AVESTA words NEW
- Avesta language information: cognates and mnemonics NEW
- Indo-European Home page
- Indo-European Languages (Part of the Ethnologue)
- Distribution of The largest language families and The Indo-European Languages

Document: Done (0.331 secs)

Start | Adobe Photoshop | 28. 02 Love will... | QuarkXPress (tm) | digital_culture | Adobe PageMa... | Hindi Links - ... | 12:07 PM

रोमन में ही है। फॉन्ट की समस्या से निबटने के लिए लोगों ने नागरी या अरबी सामग्री के चित्र (जिफ़ फ़ाइल) डाल दिए हैं, जो वज़न और आकार के हिसाब से थोड़े बोझिल तो होते हैं, लेकिन अपने समय के एक कारगर जुगाड़ हैं।

आभासी साहित्य...

यह बात शायद ढेर पाठकों को तोषप्रद लगे कि हिन्दी वेब का एक बहुत बड़ा हिस्सा साहित्य को समर्पित है। कविता, कहानी, ग़ज़ल नज़्म, उपन्यास, लघुकथा, समीक्षा, आलोचना, नाटक, हंसिकाएं, चुटकुले-तक़रीबन सारी विधाएं इसकी ज़द में हैं। प्रिंट का बहुत सारा माल यहां फिर से परोसा जाता हैं, ख़ास तौर पर लिटरेटवर्ल्ड.कॉम और वेबदुनिया इस तरह के पुनर्संस्करण खूब डालते हैं। वेबदुनिया ने लगभग साल-भर तक *हंस* की मेज़बानी करने के बाद उससे पल्ला झाड़ लिया है, हांलांकि कुछ पुराने अंक अभी भी मिल जाएँगें। वेबदुनिया का मुख्य ज़ोर अब स्वतंत्र रचनाएं प्रकाशित करने में है और इस चक्कर में अवश्य कुछ अच्छी कृतियां मिल जाती हैं। इसके अलावा उनके पास परिचित उत्कृष्ट साहित्य का क्रमशः विकासमान डेटाबेस भी हैं। शुरूआती दौर की स्पर्धा आक्रांत हीन भावना से उबरकर वेबदुनिया अब 'अन्यत्र' स्तंभ के अंतर्गत दीगर महत्वपूर्ण साहित्य/कला-केन्द्रित साइटों के लिंक्स देने लगा है। उन्हें शायद अहसास हो गया है कि समानधर्मा उपयोगी लिंक डालने से हिट्स की संख्या बढ़ाने में सहायता मिलती है। होता यूं है कि आप अगर नियमित 'सर्फ़र' नहीं हैं, या 'सर्फ़िंग सुख' लेने किसी सायबर ढाबे पर जाते हैं तो आप कम से कम वक़्त में ज़्यादा काम निकालने के चक्कर में स्वभावतः ऐसी साइट पर जाएँगे जहाँ एक जगह आपको दूसरी ज़रूरी साइटों के पते मिल जाएं। इस दिशा में वेबदुनिया की एक और अच्छी तरक़ीब यह है कि अब तक ख़ित्ते में रहने को अभिशप्त बहुत सारी लघुपत्रिकाओं को अंतर्राष्ट्रीय नक़्शे पर ला दिया है। दुनिया के किसी भी कोने में बैठा पाठक चाहे तो अंतर्वस्तु देखकर पत्रिका-विशेष घर पर मंगा ले।

लेकिन सुविधा सिर्फ़ ताज़ा सामग्री हासिल कर लेने तक सीमित नहीं है। मेरी एक इतिहासकार दोस्त को किसी शोध के सिलसिले में सुभद्रा कुमारी चौहान की मशहूर कविता 'झांसी की रानी' की दरकार हुई। उन्होंने शहर भर में स्कूली पाठ्य-पुस्तकों की ढुँढवाई करवाई लेकिन लगता है कविता इतिहास के कूड़ेदान में जा चुकी थी। उन्होंने मुझे फ़ोन किया और मैंने हमारे 'मुख्य संवाददाता' गूगल के भरोसे उन्हें आश्वासन दे दिया कि ढूंढ दूंगा। मेरे अलादीन के चिराग़ ने मुझे निराश नहीं किया। मैंने सिर्फ़ 'सुभद्रा + झाँसी' टाइप करके खोज का आदेश दिया और उसने मुझे मेरे चिर-परिचित साइट *काव्यालय* का रास्ता दिखा दिया। वहाँ पूरी की पूरी, अविकल कविता पाकर किंचित पछतावे का अहसास हुआ कि मैंने स्कूल में उसका संपादित अंश पढ़ा था। मैंने वह लिंक बाक़ायदा अपनी दोस्त को बढ़ा दिया, लेकिन अब उन्हें एक और चिंता ने आ घेरा कि यह लिंक वह उद्धृत तो कर देंगी लेकिन क्या इस अभासी स्रोत को प्रामाणिक माना जाएगा।

बहरहाल यह इतिहास के अनुशासन और उसके साक्ष्यों की प्रिंट-केंद्रित अबूझ संहिता का मामला था जिसका नेट से कोई लेना-देना नहीं है। लिहाज़ा, हम भी भटकाव छोड़कर वापस *काव्यालय* की ओर चलें, जिसे वाणी मुरारका और बिनोद तिवारी (आत्मपरिचयः आई टी डेवेलपर, हिन्दी का सतही ज्ञान; भैतिकशास्त्री जिन्हें कवि होने का गुमान है। 1997 से चला रहे हैं)। इनका काव्यलोक तीन खंडों में विभक्त हैः

1. **शिलाधारः** Classic poetry of pre-20th century. अमीर खुसरो की 'मुकरियों' से लेकर रैदास की कविताओं का छोटा-सा खंड।

2. **युगवाणीः** Contemporary poetry starting from the beginning of the 20th century. पांच भागों में फैला अमूमन एक सौ कविताओं का खंड।

3. **नवकुसुमः** Gems from new and budding poets. The Kaavyaalaya Magazine.

यह कालविभाजन तो परंपरा से प्रस्थान है ही, काव्य-चयन में भी उदारता दीखती है। संकलन की अर्हता आलोचकों की राय से तय नहीं होती है। जो इनके संचालकों को रुच जाय, जिसकी इबारत उपलब्ध हो जाय, वही वे अपने संभाव्य पाठकों से साझा कर लेते हैं। चूंकि इस दुनिया में आप अपने पाठकों के बारे में कोई पूर्वनिश्चित राय नहीं रखते इसलिए मदद के लिए शब्दार्थ भी दिये गए हैं। वैसे तो फ़ॉन्ट की दुश्वारियों से बचने के लिए पाठ की प्रतियां छविरूप में भी उपलब्ध हैं लेकिन मेरी सलाह होगी कि आप दिए गए निर्देशों के अनुसार शुषा फ़ॉन्ट डाउनलोड कर लें, आगे भी काम आएगा।

मसलन *अभिव्यक्ति* या *अनुभूति* पर, जो क्रमशः गद्य और पद्य पर केन्द्रित हिन्दी साहित्य की दो सबसे उम्दा साइटें हैं। लोकप्रिय भी। साहित्यिक दुनिया के राजेन्द्र यादव जैसे कुछ दिग्गज अक्सर बड़े सशंक भाव से मुझसे पूछते हैं कि विश्वजाल पर भी कोई हिन्दी के पन्ने देखता है? उनकी ख़िदमत में मैं नेडस्टैट के आंकड़े पेश करना चाहता हूँः गिनती के आरंभ से यानी फ़रवरी 2001 से *अभिव्यक्ति* पर कोई 56,173 मेहमान पधार चुके हैं, जिनमें से तक़रीबन 33% अमेरिका से और लगभग 10% यूएई से। पर इससे पहले कि लोग इसे विदेशी, एनआरआई परिघटना मानकर रद्द कर दें, भारत से मिले हिट्स का प्रतिशत भी पूरे 20 से थोड़ा ही कम है। अगर आप *अभिव्यक्ति* को वेब पत्रिका मानकर 'हारे को हरिनाम' जैसी मजबूरी के रूप में देखते हैं तो मेरा सुझाव है कि थोड़ा संयम रखकर अखिलेश वाले *तद्भव* के वेब पाठकों से मिलेंः औसतन 10-12 लोग तो इसपर रोज़ाना आते हैं, जिनमें बहुसंख्यक हिट (42.7%) सिर्फ़ भारत से मिलते हैं। तद्भव की वेब-उपस्थिति अपेक्षाकृत नई है इसका चरित्र भी बुनियादी तौर पर गरिष्ठ-गंभीर साहित्यिक प्रिंट पत्रिका का है इसलिए इसमें वेबप्रिय, यूज़प्रिय, सुगम और सुलभ बनने की तमाम गुंजाइशें हैं। *अभिव्यक्ति* से तुलना करूँ तो चंद ग़ौरतलब चीज़ें सामने आती हैंः *अभिव्यक्ति* की अभिलेखन-प्रक्रिया (आर्काइविंग) ठोस है जिससे आपको पुराने अंक जब चाहें मिल जाएँगे। इसमें हाइपरलिंक तकनीक का कारगर इस्तेमाल हुआ है, यानी एक पन्ने से दूसरे तक अनायास जाया जा सकता है, जिससे पन्ने की लम्बाई नही अखरती। मुखपृष्ठ पर अंतर्वस्तु की आकर्षक प्रस्तुति है, साज-सज्जा को ज़रूरी माना गया है — भले ही प्रकृति के प्रति घनघोर आसक्ति छायावादियों की याद दिला जाती है — लेकिन जावा आलेख में कविताओं के साथ रंगीन चल-चित्रों का उपहार मोहक तो है ही, एक संचिंतित और सुरूचिपूर्ण तकनीकी इस्तेमाल भी है। *अभिव्यक्ति* का कलेवर, इसका दायरा विस्तृत है और चूँकि इसे हर हफ़्ते परिवर्द्धित किया जाता है, इसलिए पाठकों को कभी निराशा नहीं होती। अभी पिछले दिनों पत्रिका ने कथा महोत्सव के तहत 'प्रवासी भारतीयों के संकलन' की प्रस्तुति की जिसमें अलग-अलग देशों से कई नामी-गिरामी कथाकारों जैसे प्रेम जनमेजय, पूर्णिमा वर्मन, कृष्ण बिहारी, अश्विन गाँधी, शैल अग्रवाल और ऊषा वर्मा आदि की कहानियाँ है। इनमें जड़ों का मोह और प्रवास का अवसाद अनायास झाँक उठता है। लेकिन, *अभिव्यक्ति* सिर्फ़ 'नॉस्टैल्जिया' नहीं थोपती, बल्कि वर्तमान से भी सांस्कृतिक और रचनात्मक संवाद करती दीखती है। मसलन, हिन्दी दिवस पर सुधा अरोड़ा का सामयिक निबंध ' "राजभाषा" को "राज" के चंगुल से बचाकर उसे "जन" भाषा बनाइए' दो टूक बातें करता है। *अभिव्यक्ति* के अनेक स्तंभों में से एक है 'कला संगम' जिसमें भारत की सोलह भाषाओं की चुनिंदा कहानियों का प्रतिनिधित्व है। कुछ अच्छे, चित्रमय यात्रा-वृत्तांत भी हैं।

अभिव्यक्ति की जुड़वाँ बहन *अनुभूति* के पास आख़िरी गिनती पर विश्व के 312 से अधिक कवियों की तक़रीबन 1060 कविताओं का संकलन है। गौरव ग्रंथ में धर्मवीर भारती का *अंधा युग,* दिनकर का *कुरूक्षेत्र*, बच्चन की *मधुशला*, निराला की *राम की शक्तिपूजा* और जगदीश गुप्त की *साँझ* उपलब्ध हैं तथा तुलसीदास की *कवितावलि* तथा श्यामनारायण पांडेय की *हल्दीघाटी* का वादा है। पाठकों की कविताओं के लिए अलग से जगह है। हास्य-व्यंग्यपरक कविताओं के खंड में मशहूर सरोजिनी प्रीतम और काका हाथरसी से लेकर निदा फ़ाज़ली तक। चलते-चलते, *अनुभूति* के मुरीदों के बारे में नेडस्टैट का एक आँकड़ाः 28 जून 2001 से आज (28.9.'02) तक इस पर कोई 37,627 लोग आ चुके हैं, अपने व्यस्ततम दिन में इसे 246 हिट्स मिले। और सत्येश भंडारी की एक लज़ीज़ हास्य कविता, जो शायद चंद गंभीर इशारे भी करती हैः

इंटरनेट पर शादी

कनाडा के मेल का,
मुंबई की फ़ीमेल से,
ई-मेल के ज़रिये,
बेमेल मेल हो गया,
देखते देखते खेल हो गया।

कल शाम मेरे पड़ोस की लड़की,
मेरे घर आई और बोली,
अंकल जी, कल आप
घर में ही रहिये,
कहीं जाइये मत,
मेरी शादी है।

न बाजे गाजों का शोरगुल,
न रिश्तेदारों की हलचल,
न ढोलक की थाप,
न मेंहदी की छाप।
और अभी तो शादी का
मौसम भी नहीं है।
वो बोली,
शादी इंटरनेट पर है।

पानी में शादी,
हवा में शादी तो सुनी थी,
मगर इंटरनेट पर शादी?
बड़ा अजीब लगा सुनकर।
कैसे हुआ यह सब?

ई मेल से परिचय हुआ,
चैट रूम में रोमांस बढ़ा,
अब डबल्यू डबल्यू डबल्यू,
मैरेज डॉट काम पर शादी है।
ई पंडित मंत्रोच्चार करेंगे, और
आप जैसे दर्शक आशीर्वाद दें

पड़ोस की लड़की थी,
समझाना धर्म था, बोला
देखो! इस तरह के
कम्प्यूटर प्रेम में बड़ा ख़तरा है।
ई मेल के ज़रिये
बड़े बड़े वाइरस आते हैं।
तुम्हारे प्यार की डिस्क
क्रैश हो जाएगी, और
रोमांस का पैकअप हो जाएगा।
वो बोली,
परवाह नहीं, अंकल!
मेरे पास सॉलिड बैकअप है।
प्यार का सॉफ़्टवेयर
फिर लोड कर लूंगी।

समझाना बेकार था, बोला
अच्छा बताओ,
मुझे क्या करना है?
बोली, कुछ नहीं अंकल,
कल बस घर में रहना है।
शाम को छह सात के बीच
इंटरनेट खुला रखना है।
मेरी शादी वाली साइट पर
मुझे और केन को
माउस घुमाकर
शादी के फेरे लेते देखना है।
और, जब शादी हो जाए तब
शगुन के रूप में
अपने क्रेडिट कार्ड का नंबर
बताई जगह पर भरना है।

विविध व्यंजनों से लदी-फदी एक और थाली है बोलोजी.कॉम उर्फ़ हिंदीनेस्ट.कॉम। साहित्य के अलावा भक्तिकालीन धर्म पर दिलचस्प लेख हैं, कविता-कहानी-निबंधों का एक बड़ा-सा ज़ख़ीरा है, जिसके मंच पर नामी-गिरामी लेखकों के साथ अल्पज्ञात रचनाकार भी मिल जाते हैं। हिंदीनेस्ट वस्तुतः इंडियानेस्ट नामक अंग्रेज़ी पोर्टल की बहन है। दोनों ही ने समस्यापूर्ति की लगभग लुप्तप्राय परंपरा को पुनर्जीवित कर पाठकों से कुछ मज़ेदार कृतियाँ निकलवाई हैं। कार्यशाला नामक इस स्तंभ के अब तक तेरह आयोजन हो गये हैं और एक ही 'समस्या' पर हिन्दी और अंग्रेज़ी के जवाब मनोरंजक तुलना का मौक़ा देते हैं। मॉडल *कादंबिनी* वाला ही है यानी कि आप दिये हुए चित्र को देखकर कुछ रचें लेकिन यहाँ पद्य में लिखने की कुछ ख़ास माँग नहीं है, न ही कोई शब्द सीमा। नृत्य, स्वास्थ्य, संस्मरण, व्यंग्य — इन सब के अंतर्गत कुछ न कुछ ऐसी सामग्री है जो हिन्दी के घनघोर पाठकों से भी वाहवाही लूट लेने की सलाहियत रखता है। हिंदीनेस्ट के इस छोटे-से क़सीदे में दो बातें और — इसमें कुछ मनमोहक चित्रलेख हैं और याहू, रीडिफ़, वेबदुनिया या सिफ़ी की तरह यहाँ भी मुफ़्त ई-मेल सुविधा उपलब्ध है।

...और सहयोग

साइटों के इन बड़े घरानों के अलावा चंद आभासी लघु-पत्रिकाएँ हैं, जिन्हें व्यक्तिगत या मुफ़्त या थोड़े विज्ञापनों के बदले वेबस्थान मुहैया कराने वाली एजेंसियों का चतुर लाभ उठाकर शौक़िया साइट बनानेवाले लोग चलाते हैं। ये साइटें आपको 'सर्च' करने पर शायद ही मिलें, लेकिन विश्वव्यापी 'हिन्दी रिंग' से जुड़कर इनमें से कई ने अपना जीवंत अस्तित्व बनाए रखा है। मामला बहुत सीधा हैः जिस तरह हमारे विद्वान एक दूसरे को उद्धृत करके दोनों पक्षों को ख्यात कर देते हैं, या जिस तरह एक सामान के साथ दूसरे के मुफ़्त आ जाने से दोनों का विज्ञापन हो जाता है, उसी तरह एक आपसी समझदारी के तहत लोग अपने पृष्ठों पर अपने हमक़दम साइटों के लिंक दे देते हैं, फ़िर ऐसे कई हममक़सद साइट मिलकर एक साझा मंच बना लेते हैं, जो हर किसी को दूसरों का पता दे देता है। इससे हमारे जैसे वेब-घुमक्कड़ों का पंथ-श्रम घट जाता है।

सहयोग/सामूहिकता/सामुदायिकता नेट की ख़ासियत है। एक बंगालन लड़की है। दिल्ली में रहने वाली। उसे अचानक हिन्दी सीखने की सूझती है और वह याहू के हिन्दी ग्रुप में शामिल होकर इस आशय का एलान करती है। उस लिस्ट पर मौजूद एक जर्मन, एक अमेरिकी और एक अंग्रेज़ उसका तहेदिल से मुखर ख़ैरमक़दम करते हैं, बाक़ी ख़ामोश ख़ुशी से। हम हिंदीवाले शायद इस बात पर हँसें लेकिन उस लिस्ट पर एक आम राय है कि हिन्दी सीखने का सबसे आसान तरीक़ा है हिन्दी फ़िल्में देखना। इस बात पर भले ही बहस हो ले कि मोहम्मद रफ़ी का तलफ़्फ़ुज़ किशोर कुमार से अच्छा है, या अमिताभ का लहज़ा नसीर से बेहतर है पर यहाँ आनंद बक्षी के 'स्टेशन से गाड़ी जब छूट जाती है तो' के निहितार्थ पर वैसी ही संजीदा बहस होती है, जैसी हम मुक्तिबोध की कविता पर करते हैं। उसी लिस्ट का एक और वाक़या। अब की बारी एक अंग्रेज़ लेखक आता है। वह मुंबई के इर्द-गिर्द एक उपन्यास लिखना चाहता है, लेकिन उसे ठीक-ठीक पता नहीं कि उसके चरित्र अपने माँ-बाप, चाचा-चाची को कैसे संबोधित करेंगे। समस्या को रखने की देर हैः जिसको जो सूझता है, मददगार सुझाव लेकर फ़ौरन हाज़िर हो जाता है। लेखक घर बैठे सारा ज्ञान बटोरकर सब का धन्यवाद देते हुए विदा लेता है और कोई इसका बुरा नहीं मानता कि उस अवसरवादी ने संगठन क्यों छोड़ा।

एक आख़िरी और निजी क़िस्सा। इस और इसी क़िस्म के दीगर लिस्ट लगातार इस बात से परेशान रहे हैं कि उन्हें रोमन में हिन्दी लिखने से कब मुक्ति मिलेगी। मैं ख़ुद हूँ। इतने में कोई घोषणा करता है कि बराहा.कॉम पर एक अच्छी लिप्यंतरण प्रणाली उपलब्ध है। मैं फ़ौरन बराहोन्मुख होता हूँ और उस कन्नड़ साइट से अपने काम का सॉफ़्टवेयर उतार लेता हूँ और मज़े करता हूँ। कुछ दिनों बाद कोई बताता है कि युडिट नामक एक टेक्स्ट एडिटर है, जो युनिकोड में लिखता है, यानी एक ऐसी तकनीक में जो किसी भी भाषा को जवार से निकालकर सार्विकता प्रदान करे, आपके फ़ाइल और बुकमार्क के नाम आपके डेस्कटॉप पर नागरी में दिखाए, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह आप उन्हें अंग्रेज़ी में देखने के अभ्यस्त हो चुके हैं। यह चमत्कार मेरे लिए भारत में सलमान रश्दी के पैदा होने जैसा था। मैंने अपने 'टेकी' दोस्त सुप्रीत की मदद से उसे अपनी मशीन पर लगाया और पहली बार नागरी में ई-ख़त लिखकर फूला नहीं समाया। अभी इस नेमत को बरसे कुछ ही दिन हुए थे कि याहू के हिन्दी ग्रुप में किसी

ने एक और सुर्रा छोड़ा कि एक सॉफ़्टवेयर है जो विन्डोज़ पर युनिकोड में लिखता है, ग़ैर-व्यावसायिक इस्तेमाल के लिए मुफ़्त में उपलब्ध है, फ़ॉन्ट आप बीबीसी हिन्दी से ले लें और हमारे पास एक देवरोमू नामक ऐसा कुंजीपट-चालक है जो ध्वन्यात्मक आदेश लेता है, यानी 'K' से 'क' लिखता है, आदि-आदि। आख़िरी लाइन सबसे अहम थीः अगर कोई चाहे तो हम उसे निजी इस्तेमाल के लिए दे सकते हैं। मैंने फ़ौरन अपनी याचिका भेजी और उसी दिन देवरोमू हाज़िर। मैं उसे टेस्ट करने में जुट गया। पता लगा बाक़ी सब तो ठीक है लेकिन सॉफ़्टवेयर देनेवाले का नाम ही मैं हिन्दी में नहीं लिख पा रहा हूँ। बॉब ईटन में बा के ऊपर का चंद्र पूरे कीबोर्ड से ही ग़ायब है। लिहाज़ा मैं ईटन साहब को रुआँसे अंदाज़ में चिट्ठी लिखता हूँ, वे अपने दोस्त स्टीव स्मिथ को लिखते हैं (दोनों ने मिलकर यह कुँजीपट बनाया था) और स्टीव स्मिथ मुझे बिल्कुल दुखी करनेवाली ख़बर देते हैं कि वाक़ई चंद्र का कोई प्रावधान नहीं है। मुझे लिखने के लिए दोनों का धन्यवाद देकर मैं अपने भाग्य से समझौता करने की मनस्थिति में आने को होता हूँ कि स्मिथ का एक और मेल आता है, भूल-सुधार करते हुए, कि उन्होंने कीबोर्ड में ज़रूरी परिवर्तन कर दिये हैं, और नया पैकेज भी मेल में संलग्न है। मेरी मनमाँगी मुराद पूरी हो गई थी। इन छोटी-छोटी कहानियों के ज़रिए मैं सिर्फ़ यही कहना चाह रहा हूँ कि नेट पर लगातार वैकल्पिक समुदायों की रचना होती रहती है; लोग अपनी ज़रूरतों के लिए सहयोग माँगते हैं जो उन्हें मिल भी जाता है। सभ्य विचार-विमर्श होता है और आम तौर पर लोग अपने ज्ञान की ग़ैर-ज़रूरी नुमाइश नहीं करते। सामनेवाले को महज़ आपकी और अपनी ज़रूरतों में दिलचस्पी है, बस। हाँ कभी-कभार तीखी झड़पें भी होती हैं, घृणा का प्रोपेगैंडा भी, लेकिन अगर बहस नक़ाबिले बर्दाश्त हो जाए तो 'लॉगआउट' कर जाने की आज़ादी तो आपकी अपनी है ही।

बतौर निष्कर्ष थोड़ी टेक् चर्चा उर्फ़ संभाव्य का वर्तमान

उम्र का एक घिसा-पिटा मुहावरा लें तो नेट के सूचना महामार्ग पर हिन्दी अभी उंगली पकड़ कर चलना सीख रही है। हालांकि सारे प्रमुख अख़बारों ने ख़ुद को वेब पर डाल दिया है लेकिन नेट संस्करण प्रिंट की प्रतिलिपि लगते हैं, जो डिजिटल तकनीक की क्षमताओं के दोहन की अच्छी मिसाल नहीं है। दृश्य, श्रव्य, हाइपरलिंकिंग आदि के अभाव के अलावा पाठकों की भागीदारी के पर्याप्त मौक़े नहीं हैं। अच्छा हो अगर लिपियों की इन छोटी-छोटी दुकानदारियों का सिलसिला बंद हो जाए। यद्यपि डायनैमिक फ़ॉन्ट्स के ज़ोर पकड़ने से फ़ॉन्ट डाउनलोड की रोज़ाना कवायद से राहत मिली है, लेकिन सूचना, ज्ञान और मनोरंजन का तेज़ प्रसार तब तक संभव नहीं होगा जब तक मानकीकृत लेखन शैली नहीं चल जाती। युनिकोड में इस तरह की संभावनाएँ हैं क्योंकि इसे 'इंटरनेट एक्सप्लोरर' भी पढ़ लेता है और 'मोज़िला' भी। विडोंज़ में तो इसका सपोर्ट है ही, लिनक्स पर काम करने वाला मुक़्त सॉफ़्टवेयर समुदाय भी अब भारतीय भाषाओं में सक्रिय दिलचस्पी लेने लगा है।

सोर्सफ़ोर्ज.नेट पर वॉलंटियर प्रयास शुरू हो गए हैं। वागीश शुक्ल ने तो LaTeX पर पूरी किताब ही छाप डाली; ऑमेगा सिस्टम के आ जाने से दायें-बायें-ऊपर-नीचे-आड़े-तिरछे किसी भी तरह से और किसी भी तरह की इबारत लिखी जा सकेगी। तमिलनाडु में कुछ लोग सस्ती तकनीक इस्तेमाल कर गांवों को कम्प्यूटर और इंटरनेट से जोड़ रहे हैं। आईआईटी मद्रास की हेमा मूर्ति ने एक अच्छा क़िस्सा सुनायाः वहाँ किसी गाँव में भिंडी के पौधों को कीड़े लग रहे थे कि एक स्कूली लड़की ने नेट के ज़रिए बीमार पत्तियों के चित्र कृषि विशेषज्ञों को भेज कर फ़ौरी और अचूक इलाज ढूंढ लिया। ज़ाहिर है कि इस तरह भिंडी का इलाज हो सकता है तो मानवीय शरीर का भी हो रहा है।

आईआईआईटी हैदराबाद ने लोगों से शब्ददान लेकर पूरा शब्दकोश बना लिया है, जो उनकी साइट पर मुक्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है। उनका 'अनुसारक सॉफ़्टवेयर' भारतीय भाषाओं के बीच कामचलाऊ अनुवाद कर संवाद को संभव बनाता है। तलहथी पर रखकर चलनेवाला किफ़ायती 'सिंप्यूटर' जल्द ही आ जाएगा। अगर बोले हुए शब्दों का एक विशाल भंडार इकट्ठा हो जाए तो 'बोली की पहचान' करने वाला यंत्र (speech recognition system) भी बन जाएगा और तब लिखने की भी ज़रूरत नहीं, टाइपिस्ट को न बोलकर मशीन को बोलिए।

और यह तो शुरुआत हैः कहते हैं न, आगे-आगे देखिए होता है क्या..?

स्रोत, संदर्भ और संसाधन

सबसे ज़रूरी वेब ठिकाना

http://www.cs.colostate.edu/~malaiya/hindilinks.html

उर्दू-हिन्दी लिंक्स

http://www.columbia.edu/~fp7/urduhindilinks.html
http://www.angelfire.com/sd/urdumedia/hind.html
http://www.gulzaronline.com
http://www.msci.memphis.edu/~ramamurt/ghazal.html#Mir
http://userpages.umbc.edu/~kjoshi1/msjoshi.html
http://www.javedakhtar.com
http://www.ravindrakalia.com/gcs/book.htm
http://www.narendrakohli.org
http://babel.uoregon.edu/yamada/guides/hindiurdu.html
www.urdustan.com
www.ebazm.com
http://www.shayaranamusic.com
http://www.cs.wisc.edu/~navin/india/songs
http://www.bollywhat.com/lyrics/mk_lyr.html#1
http://www.wupper.de/sites/unnet/home.html#JAADOO

भाषाई कम्प्यूटिंग: संसाधन/प्रॉजेक्ट

http://www.bharatbhasha.org.in/articles.htm
http://www.acharya.iitm.ac.in/ind_fonts.html
http://www.unicode.org/unicode/standard/translations/hindi.html
http://indic-computing.sourceforge.net
http://www.indlinux.org
http://www.yudit.org
http://www.ncst.ernet.in
http://www.tavultesoft.com
http://www.iiit.net/ltrc/downloads.html
www.cdac.org.in
http://www.mithi.com
http://users.skynet.be/hugocoolens/hindi/hindi.html
http://members.tripod.com/sbiswas/IWrite32/IWrite32.html#UsingIt
http://www.bttlindia.com/mozilla
http://www.bridges.org/toolkit/freeIT.html#host
http://hindi3.tripod.com
http://www.baraha.com/downloads.htm
http://www.cs.colostate.edu/~malaiya/devafonts.htm
http://www.alanwood.net/unicode/devanagari.html
http://theory.tifr.res.in/bombay/history/people/language/hindi.html
http://www.aksharamala.com
http://www.ucl.ac.uk/~ucgadkw/indnet-textarchive.html
http://www.languageinindia.com

साहित्यिक पत्रिकाएं

http://www.tadbhav.com
http://www.abhivyakti-hindi.org
http://www.aanubhuti-hindi.org
http://www.literateworld.com
http://manaskriti.com/kaavyaalaya
http://hindi.india-today.com
http://www.womeninfoline.com/hindi/internet/index.asp
http://www.kalayan.org/kalayanpatrika/index.html
http://www.bharatdarshan.co.nz/stories/index.html

विचार समूह
http://groups.yahoo.com/group/Hindi-Forum/messages/50?threaded=
http://groups.yahoo.com/group/hindi/messages/359
http://groups.yahoo.com/group/subhaashitas

शौक़िया वेब पृष्ठ
http://www.geocities.com/chandra_pm/hindi_top.html
http://www.geocities.com/aawasthi
http://www.shails.com/manjusha/poem6.htm
http://www.geocities.com/sumankghai
http://www.geocities.com/Tokyo9785/madhu1.gif
http://koshnr.tripod.com
http://users.panda.be/walter.rajesh

शब्दकोश: संस्कृत, फ़ारसी, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेज़ी
http://sanskrit.gde.to/hindi/dict/eng-hin-itrans.html
http://aa2411s.aa.tufs.ac.jp/~tjun/sktdic
www-aa.tufs.ac.jp/~kmach/hnd-la-e.htm
http://www.ishipress.com/wordlist.htm
http://dsal.uchicago.edu/dictionaries/index.html
http://www.cs.wisc.edu/~navin/india/urdu.dictionary

सरकारी और स्वायत्त संसाधन
http://dol.nic.in/software.htm
http://tdil.mit.gov.in/knowledge.htm# Geeta and Upanishad in Hindi
http://hindinideshalaya.nic.in
http://www.sahitya-akademi.org
http://www.hindivishwa.nic.in/hindivishwa/welcome.html
http://rajbhasha.com/hindisansar/hindsnsr.htm

पोर्टल्स
http://www.webdunia.com
http://hindi.netjaal.com
www.rediff.com
www.sify.com
www.prabhasakshi.com
http://www.sahitya-akademi.org

रेडियो/टीवी
http://www.bbc.co.uk/hindi
http://www.nic.in/indiapublications/Hindi-Pub/Reference/HR06.htm
http://www.aajtak.com
http://www.ddindia.net

अख़बार
http://203.200.89.66:8080/sahara
http://www.amarujala.com
http://www.bhaskar.com
http://www.naidunia.com
http://www.rajasthanpatrika.com
http://www.jagran.com
http://www.prabhatkhabar.com
http://www.hindimilap.com